माध्यमिक विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर मूल्य के प्रभाव का अध्ययन

रश्मि त्रिवेदी
सहायक प्राध्यापक, विक्टोरिया कॉलेज ऑफ एजुकेशन, भोपाल (म.प्र.) भारत

सारांश
प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर मूल्य के प्रभाव को जानना है। प्रस्तुत अध्ययन में भोपाल शहर के विभिन्न क्षेत्रों से 600 किशोर विद्यार्थियों का चयन किया गया है। ये सभी 13 से 19 वर्ष की आयु के बीच के हैं। न्यादर्श का चयन करने के लिए यादृच्छिक चयन विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श के रूप में 300 बालक तथा 300 बलिकाओं को लिया हैं, जो कि विभिन्न शासकीय तथा अशासकीय विद्यालय में अध्ययनरत हैं। व्यक्तित्व गुणों के मापन के लिए विद्यार्थियों पर कैटल की 16 व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली (हिन्दी रूपांतरण एस.डी. कपूर प्रारूप), व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली हेतु (जी.पी. शैरी एवं आर.पी. ओझा), मापनी का प्रशासन किया गया। परिकल्पनाओं के परीक्षण एवं प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं सह–संबंध सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

मुख्य बिन्दु– किशोर विद्यार्थी, व्यक्तित्व एवं मूल्य इत्यादि

I प्रस्तावना

मानव जीवन में शिक्षा की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा मानव के व्यवहार में सौन्दर्य लाने का कार्य करती है। शिक्षा के द्वारा समाज अपनी संस्कृति की रक्षा करता है और सभ्यता के रथ को आगे बढ़ाता है। बालक की वैयक्तिक प्रगति, उसका शारीरिक मानसिक और भावनात्मक विकास तब तक भली प्रकार नहीं हो पाता है जब तक वह शिक्षा न ग्रहण करे। कहने का तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश पाकर कमल खिल उठता है तथा सूर्य के अस्त होने पर कुम्हला जाता है, ठीक उसी प्रकार शिक्षा के प्रकाश को पाकर प्रत्येक व्यक्ति कमल के फूल की भाँति खिल उठता है।

मूल्य का विकास समाज में होता है। सामाजिक सम्पर्क के परिणामस्वरूप नैतिक विकास भी होता है। हम कुछ मूल्यों को प्राथमिकता देते है व कुछ अन्य मूल्यों को त्यागते है। मानव आचरण केवल विचारों द्वारा ही नहीं होता अपितु भावों द्वारा भी होता है। सिद्धान्तों को भावों द्वारा शक्ति मिलती है। स्थायी भावों के आधार पर ही मूल्यों का चयन करते है और उच्च मूल्यों के निरन्तर चुनाव करने से यह हमारा स्वभाव बन जाता है। हमारे व्यक्तित्व का अंग बन जाता है, और हमारे चरित्र का निर्माण होता है।

किशोरावस्था उम्र का वह पड़ाव है जहाँ न तो बचपन रह जाता है और न ही वैचारिक परिपक्वता आती है। ऐसे में किशोर–किशोरियों को सम्भालना व समझना उनके अभिभावकों के लिए खासा मुश्किल भरा काम होता है। इस मामले में जरा सी चूक किसी भी अप्रिय नतीजे को जन्म देने के लिए काफी होती है। व्यक्तित्व में एक मनुष्य के न केवल शारीरिक और मानसिक गुणों का वरन् उसके सामाजिक गुणों का भी समावेश होता है किन्तु इतने से भी व्यक्तित्व का अर्थ पूर्ण नहीं होता है। कारण यह है कि यह तभी संभव है, जब एक समाज के सभी सदस्यों के विचार, संवेगों के अनुभव और सामाजिक क्रियाऐं एक सी हों। ऐसी दशा में व्यक्तित्व का प्रश्न ही नहीं रह जाता।

आज समाज में मूल्यों का ह्रास व्यक्ति समाज और राष्ट्र के लिए एक गंभीर समस्या है। यदि व्यक्तित्व का समग्र विकास करना है, समाज में सत्य, प्रेम, सहयोग, सहानुभूति, सहिष्णुता, बन्धुत्व का वातावरण पैदा करना है, राष्ट्र की रक्षा करनी है, उसकी एकता और अखंडता बनाए रखनी है व आर्थिक समृद्धि की जानी है तो मूल्यों के महत्व को प्रत्येक व्यक्ति को न केवल समझना होगा वरन् उन्हे अपने जीवन में उतारना भी होगा।

(क) समस्या कथन
"माध्यमिक विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर मूल्य के प्रभाव का अध्ययन"

(ख) अध्ययन की आवश्यकता
आज हमारे समाज का उत्तरोतर नैतिक पतन होता जा रहा है। भौतिक जीवन को महत्ता देने वाले अपने निहित स्वार्थों की दौड़ में अपने आदर्शों से विमुख हो रहे हैं। संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था में नैतिक मूल्यों और धार्मिक प्रवृतियों को कोई स्थान नहीं दिया जा रहा है। विधार्थियों में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता, उद्दंडता, अश्रद्धा तथा कर्त्तव्यनिष्ठा की भावना इसी का परिणाम है।

बालक के व्यक्तित्व का सर्वागींण विकास करने के लिए मूल्य एवं नैतिक शिक्षा आवश्यक है। चरित्र का जीवन में बड़ा महत्व होता है। चरित्रवान व्यक्ति समाज को नयी दिशा दिखा सकता है। चरित्र के निर्माण में आध्यात्मिक ज्ञान एवं नैतिक शिक्षा सहायक होती है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बालकों के व्यक्तित्व पर मूल्य के प्रभाव को जानना है। मूल्य तथा बालक के व्यक्तित्व में सद्गुणों का विकास करने में सहायक होते हैं।

II पूर्व शोध कार्य

सरोज मोनिका (2017) ने व्यक्तित्व विकास के सन्दर्भ में किशोरों की आवश्यकताओं का अध्ययनपर शोध कार्य किया।प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य किशोर एवं विद्यार्थियों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं का अध्ययन करना है। इस अध्ययन हेतु गुच्छ न्यादर्श विधि द्वारा उत्तर प्रदेश राज्य के इलाहाबाद, लखनऊ, कानपुर, आगरा तथा वाराणसी शहर से माध्यमिक स्तर के 304 किशोर विद्यार्थियों का चयन किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में आर. आर. त्रिपाठी (1979) द्वारा निर्मित व्यक्तित्व आवश्यकता अनुसूची का प्रयोग किया गया है। एकत्रित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक–विचलन व टी–अनुपात प्रविधि का प्रयोग किया गया। अध्ययन से प्राप्त परिणाम इस प्रकार हैं–किशोर विद्याथियों में सम्प्राप्ति, सानिध्य व परोपकार की मांग सबसे अधिक प्रबल पाई गई जबकि आक्रामकता, वैभिन्नता व स्वायत्ता की मांग सबसे कम प्रबल पाई गई। किशोर छात्रों में सम्प्राप्ति, सानिध्य व व्यवस्था की मांग सबसे अधिक प्रबल पाई गई, जबकि वैभिन्नता,

सहनशीलता, आक्रामकता व आत्महीनता की मांग सबसे कम प्रबल पाई गई। किशोर छात्राओं में परोपकार, स्वीकृति, सानिध्य व सम्प्राप्ति की मांग सबसे अधिक प्रबल पाई गई जबकि आक्रामकता,स्वायत्ता व वैभिन्नता की मांग सबसे कम प्रबल पाई गई। किशोर छात्रों एवं छात्राओं की व्यक्तित्व आवश्यकतों में सम्प्राप्ति, स्वीकृति, स्वायत्तता, सानिध्य, प्रभुत्व, आत्महीनता, परोपकार, परिवर्तन, सहनशीलता तथा आक्रामकता की मांग में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सिंह,यशपाल (2016) ने एन.सी.सी. एवं एन.एस.एस. में प्रतिभागी छात्रों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया। प्रस्तुत शोध कार्य उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद जनपद के दो महाविद्यालयों में किया गया है, जिसमें 75 एन.सी.सी. में प्रतिभागिता करने वाले छात्र तथा 75 एन.एस.एस. में प्रतिभागिता करने वाले कुल 150 छात्रों को न्यादर्श के रूप में चयन किया गया है। एन.सी.सी. एवं एन.एस.एस. में प्रतिभागी छात्रों के मूल्य में होने वाले परिवर्तन को दर्शाता है। प्रस्तुत शोध में जे.पी. शैरी व आर.पी. वर्मा द्वारा निर्मित प्रश्नावली का उपयोग आंकड़ों के संग्रह करने हेतु किया गया है। इस शोध के परिणाम दर्शाते हैं कि एन.सी.सी. तथा एन.एस.एस. में प्रतिभागिता करने वाले छात्रों में सौन्दर्यात्मक मूल्य समान रूप से विद्यमान है। जबकि आर्थिक एवं ज्ञानात्मक मूल्यों में सार्थक अन्तर है।

III अध्ययन के उद्देश्य

(क) किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर मूल्यों के प्रभाव का अध्ययन करना।
(ख) किशोर बालकों के व्यक्तित्व पर मूल्यों के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
(ग) किशोर बालिकाओं के व्यक्तित्व पर मूल्यों के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

IV शोध प्रविधि

(क) अध्ययन के परिकल्पनाएँ

(i) किशोर विधार्थियों के व्यक्तित्व पर मूल्यों के प्रभाव में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं हैं।
(ii) किशोर बालकों के व्यक्तित्व पर मूल्यों के प्रभाव में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं हैं।
(iii) किशोर बालिकाओं के व्यक्तित्व पर मूल्यों के प्रभाव में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं हैं।

(ख) परिसीमाएँ

(i) प्रस्तुत अनुसंधान केवल भोपाल शहर तक सीमित है।
(ii) प्रस्तुत अनुसंधान कार्य केवल 13–19 वर्ष के किशोर बालक एवं बालिकाओं के लिए है।
(iii) प्रस्तुत अनुसंधान में शासकीय व अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत 600 विद्यार्थियों पर शोध कार्य किया गया है।

(ग) शोध अध्ययन विधि
वर्तमान शोध में वर्णानात्मक सर्वेक्षण विधि को प्रयुक्त किया गया है।

(घ) न्यादर्श प्रारूप एवं न्यादर्श का चयन
प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श हेतु भोपाल शहर का चयन किया गया है। न्यादर्श चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है। न्यादर्श के रूप में भोपाल शहर के विभिन्न क्षेत्रों से 600 किशोर विद्यार्थियों का चयन किया गया है। ये सभी 13.19 वर्ष की आयु के बीच के है। इनमें 300 बालक तथा 300 बलिकाओं का चयन किया गया जो कि विभिन्न शासकीय तथा अशासकीय विद्यालय में अध्ययनरत है।

(च) शोध के चर

(i) स्वतंत्र चर :– प्रस्तुत शोधकार्य में मूल्य स्वतंत्र चर है।
(ii) आश्रित चर :– प्रस्तुत शोधकार्य में आश्रित चर लिंग, आयु, व व्यक्तित्व हैं।

(छ) शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण
व्यक्तित्व के मापन के लिए कैटल की 16 व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली (हिन्दी रूपांतरण एस.डी. कपूर प्रारूप) एवं मूल्य के मापन के लिए व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली (जी.पी. शैरी एवं आर.पी. ओझा), मापनी का प्रशासन किया गया।

(ज) शोध कार्य का स्वरूप
प्रस्तुत अनुसंधान में शोधकर्ता निम्नानुसार अनुसंधान का स्वरूप प्रस्तावित हैं। सर्वप्रथम भोपाल शहर के शासकीय व अशासकीय विद्यालयों को सूचीबद्ध किया गया। चयनित विद्यालयों में से कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया। विद्यार्थियों पर कैटल की 16 व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली (हिन्दी रूपांतरण एस.डी. कपूर प्रारूप), व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली हेतु (जी.पी. शैरी एवं आर.पी. ओझा), मापनी का प्रशासन किया गया। मापनियों का फलांकन कर परिणामों को सूचीबद्ध किया गया तथा विभिन्न सांख्यिकी विधियों का उपयोग कर मध्यमान तथा सहसंबंध गुणांक ज्ञात किया गया। तत्पश्चात प्रकीर्ण आरेख एवं क्रांतिक अनुपात द्वारा सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सहसंबंध एवं सार्थकता ज्ञात की गई।

V परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना क्रमांक :–1

किशोर विद्याार्थियों के व्यक्तित्व पर मूल्यों के प्रभाव में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं हैं।

तालिका क्रमांक :–1
किशोर विद्याार्थियों के व्यक्तित्व एवं मूल्यों के मध्य सहसंबंध गुणांक।

Pkj (V)	समूह **(Group**	संख्या **(N)**	मध्यमान **(M)**	सारणीमान **(TV)**	सहसंबंध गुणांक **(r)**	सार्थकता0.05 स्तर
व्यक्तित्व	विद्यार्थी	600	121.88	.062	.519	सार्थक
व्यक्तिगत मूल्य			58.35			

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का मध्यमान 121.88 है तथा किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्य का मध्यमान 58.35 है। किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं व्यक्तिगत मूल्य के लिए निकाले गए सहसम्बन्ध गुणांक का मान .519 है अर्थात् व्यक्तित्व एवं व्यक्तिगत मूल्य में साधारण कोटि का धनात्मक सहसम्बन्ध है।

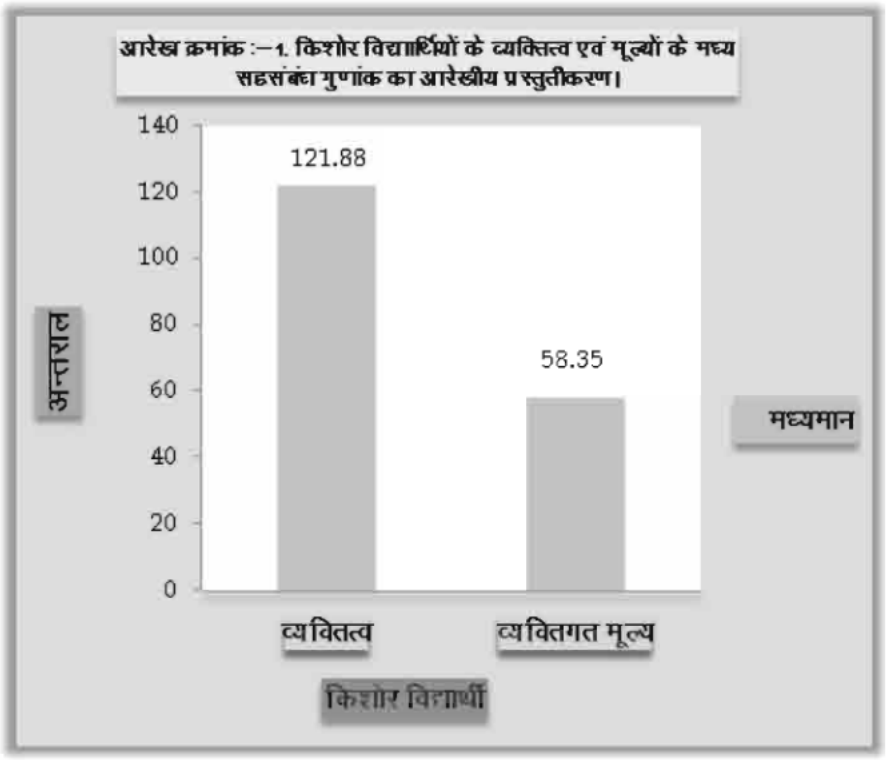

परिकल्पना क्रमांक :–2
किशोर बालकों के व्यक्तित्व पर मूल्यों के प्रभाव में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं हैं।

तालिका क्रमांक :–2.
किशोर बालकों के व्यक्तित्व एवं मूल्यों के मध्य सहसंबंध गुणांक।

Pkj (V)	समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	सारणीमान (TV)	सहसंबंध गुणांक (r)	सार्थकता0.05 स्तर
व्यक्तित्व	बालक	300	104.54	.113	.390	सार्थक
व्यक्तिगत मूल्य			50.88			

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि किशोर बालकों के व्यक्तित्व का मध्यमान 104.54 है तथा किशोर बालकों के व्यक्तिगत मूल्य का मध्यमान 50.88 है। किशोर बालकों के व्यक्तित्व एवं व्यक्तिगत मूल्य के लिए निकाले गए सहसम्बन्ध गुणांक का मान .390 है। अर्थात् व्यक्तित्व एवं व्यक्तिगत मूल्य में निम्न कोटि का धनात्मक सहसम्बन्ध है।

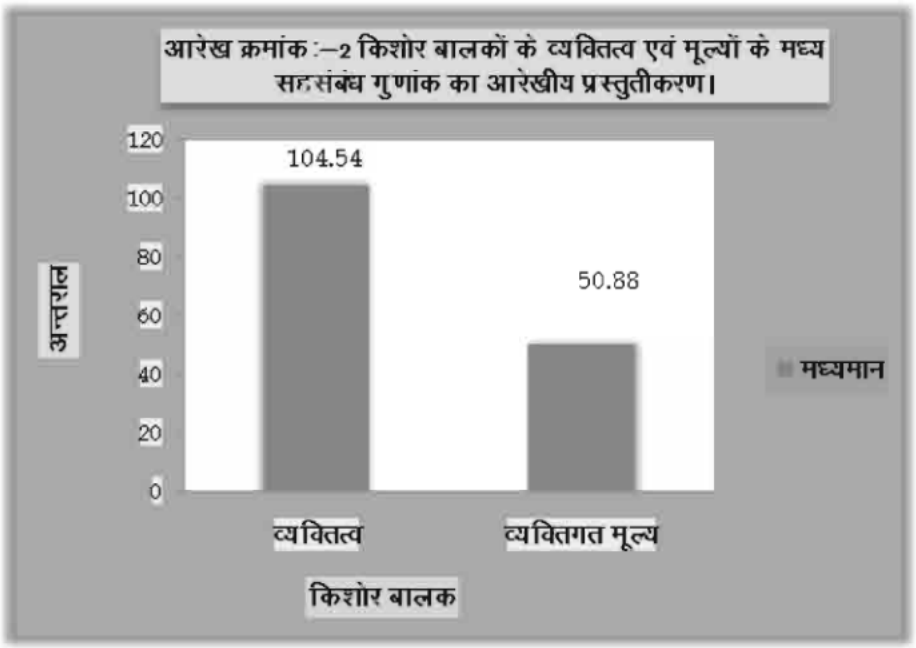

परिकल्पना क्रमांक :–3
किशोर बालिकाओं के व्यक्तित्व पर मूल्यों के प्रभाव में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं हैं।

तालिका क्रमांक :–3
किशोर बालिकाओं के व्यक्तित्व एवं मूल्यों के मध्य सहसंबंध गुणांक।

चर (V)	समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	सारणीमान (TV)	सहसंबंध गुणांक (r)	सार्थकता0.05 स्तर
व्यक्तित्व	बालिका	300	139.23	.113	.275	सार्थक
व्यक्तिगत मूल्य			65.81			

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि किशोर बालिकाओं के व्यक्तित्व का मध्यमान 139.23 है तथा किशोर बालिकाओं के व्यक्तिगत मूल्य का मध्यमान 65.81 है। किशोर बालिकाओं के व्यक्तित्व एवं व्यक्तिगत मूल्य के लिए निकाले गए सहसम्बन्ध गुणांक का मान .275 है अर्थात् व्यक्तित्व एवं व्यक्तिगत मूल्य में निम्न कोटि का धनात्मक सहसम्बन्ध है।

VI परिणाम

परिकल्पना क्रमांक :– 1

किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर मूल्यों के प्रभाव में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं हैं।

प्रमाणीकरण :–सारणी क्रमांक 4.1 में प्रदर्शित परिणामों के विश्लेषण के अनुसार किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का मध्यमान 121.88 है तथा किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्य का मध्यमान 58.35 है। किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं व्यक्तिगत मूल्य के लिए निकाले गए सहसम्बन्ध गुणांक का मान .519 है। अर्थात् व्यक्तित्व एवं व्यक्तिगत मूल्य में साधारण कोटि का धनात्मक सहसम्बन्ध है। अतः किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर मूल्य प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं।

सत्यापन :– परिकल्पना सत्यापित नहीं होती है।

परिकल्पना क्रमांक :– 2.
किशोर बालकों के व्यक्तित्व पर मूल्यों के प्रभाव में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं हैं।

प्रमाणीकरण :–सारणी क्रमांक 4.3 में प्रदर्शित परिणामों के विश्लेषण के अनुसार किशोर बालकों के व्यक्तित्व का मध्यमान 104.54 है तथा किशोर बालकों के व्यक्तिगत मूल्य का मध्यमान 50.88 है। किशोर बालकों के व्यक्तित्व एवं व्यक्तिगत मूल्य के लिए निकाले गए सहसम्बन्ध गुणांक का मान .390 है। अर्थात् व्यक्तित्व एवं व्यक्तिगत मूल्य में निम्न कोटि का धनात्मक सहसम्बन्ध है। अतः किशोर बालकों के व्यक्तित्व को मूल्य प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं।

सत्यापन :– परिकल्पना सत्यापित नहीं होती है।

परिकल्पना क्रमांक :– 3
किशोर बालिकाओं के व्यक्तित्व पर मूल्यों के प्रभाव में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं हैं।

प्रमाणीकरण :–सारणी क्रमांक 4.4 में प्रदर्शित परिणामों के विश्लेषण के अनुसार किशोर बालिकाओं के व्यक्तित्व का मध्यमान 139.23 है तथा किशोर बालिकाओं के व्यक्तिगत मूल्य का मध्यमान 65.81 है। किशोर बालिकाओं के व्यक्तित्व एवं व्यक्तिगत मूल्य के लिए निकाले गए सहसम्बन्ध गुणांक का मान .275 है। अर्थात् व्यक्तित्व एवं व्यक्तिगत मूल्य में निम्न कोटि का धनात्मक सहसम्बन्ध है। अतः किशोर बालिकाओं के व्यक्तित्व को मूल्य प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं।

सत्यापन :– परिकल्पना सत्यापित नहीं होती है।

VII सुझाव

यह शोध शिक्षकों और अभिभावकों एवं विद्यार्थियों को यह संदेश देता है कि वर्तमान में होने वाली सामाजिक समस्याओं, जो मूल्यों के ह्रास के कारण हो रही हैं उन्हें विद्यार्थियों के मूल्यों के स्तर में वृद्धि कर दूर किया जा सकता है।

(क) अभिभावकों हेतु सुझाव
अभिभावकों को अपने बच्चों से आवश्यकता व क्षमता से अधिक अकाक्षाएँ नहीं रखना चाहिए क्योंकि बहुत अधिक अकाक्षाएँ विद्यार्थियों के व्यक्तिगत जीवन पर नकारात्मक प्रभाव डालती हैं। अभिभावकों को अपने बच्चों को पर्याप्त प्रोत्साहन देना चाहिए जिससे वे अपने जीवन का निर्णय स्वयं ले सके।

(ख) शिक्षकों हेतु सुझाव
शिक्षकों को अपनी कार्य दक्षता ऐसी विकसित करनी चाहिए कि युवा पीढ़ी को दिशा भ्रमित होने तथा समाज में व्याप्त बुराइयों के निराकरण में सहायक की भूमिका का निर्वाह करें। शिक्षकों को परंपरागत शिक्षा व्यवस्था का परित्याग कर शिक्षण में नवीन शिक्षण व्यूह रचनाओं, विधियों का प्रयोग करना चाहिए जिससे विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में वृद्धि हो सके।

(ग) विद्यार्थियों हेतु सुझाव
विद्यार्थियों को अपने अभिभावकों, शिक्षकों की अच्छी बातों को आदर्श मूल्य के रूप में अपना कर अपने व्यक्तित्व में शामिल करना चाहिए। विद्यार्थियों को अपने प्रत्येक निर्णय में अभिभावकों का व शिक्षकों का सहयोग लेना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1] अग्रवाल, जे.सी. (1991). "एजुकेशनल रिसर्च एन इन्ट्रोडक्शन", न्यू देहली.

[2] भटनागर, सुरेश (1989). "शिक्षा मनोविज्ञान" लायन बुक डिपो मेरठ।

[3] भार्गव, महेश (1995–96). "मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन भार्गव" बुक हाउस, आगरा।

[4] मिश्रा, महेन्द्र कुमार (2009). "किशोर मनोविज्ञान" यूनिर्वसिटी हाउस प्रायवेट लिमिटेड जयपुर।

[5] चोपड़ा, आर.एल. एवं जॉगिड़, ओमप्रकाश (2007). मूल्य एवं नैतिक शिक्षा, स्वाति पब्लिकेशन, जयपुर

[6] सरोज मोनिका (2017) भव्यक्तित्व विकास के सन्दर्भ में किशोरों की आवश्यकताओं का अध्ययन पीएच.डी. (एज्युकेशन),श्री बेंकेटेश्वर यूनिवर्सिटी

[7] सिंह, यशपाल (2016) भएन.सी.सी. एवं एन.एस. एस. में प्रतिभागी छात्रों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन इंडियन एजूकेशनल रिव्यू 2001, वोल्यूम 37 (1). 73–83